दैनिक जागरण

वाराणसी, 10 मार्च, 2023

भारतीय ज्ञान परंपरा भारत को पुन : बनाएगी विश्व गुरु

वाराणसी (वि.): स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज द्वारा आयोजित दो दिनी अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस के समापन सत्र में निदेशक प्रो. पीएन झा ने कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान-विज्ञान, लौकिक-पारलौकिक, कर्म-धर्म व भोग-त्याग का अद्भुत समन्वय है। कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए। शिक्षा के इसी संकल्प को भारतीय ज्ञान परंपरा में अंगीकृत किया गया है। आज सनातन ज्ञान परंपरा को सक्रिय स्मृति का अंग बनाने की जरूरत है। इससे भारत पुनः विश्व गुरु बनेगा।

मुख्य अतिथि बीएचयू के प्रो. सदाशिव द्विवेदी ने कहा, भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे बड़ा आधार वेद था। भारत का अर्थ है जो सदा ज्ञान के प्रकाश से आलोकित रहे। डरबन तकनीकी विश्वविद्यालय दक्षिण अफ्रीका के प्रो. रविंदर रेना ने कहा, भारतीय ज्ञान जीवन के हर विषय में समग्रता के साथ है। संचालन डा. भावना सिंह व धन्यवाद ज्ञापन कांफ्रेंस समन्वयक प्रो. अविनाशचंद्र सुपकर ने किया। अधिशासी सचिव डा. एमपी सिंह, कुलसचिव संजय गुप्ता, प्रो. संदीप सिंह, प्रो. राजकुमार सिंह आदि थे।

समापन सत्र को संबोधित करते निदेशक प्रो. पीएन झा ● जागरण

hindbhaskar.in
हिन्द भास्कर
हर सुबह की नई तस्वीर

भारतीय ज्ञान परम्परा के मार्ग से ही भारत पुनः बनेगा विश्वगुरु-प्रो0 पी0 एन0 झा

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस का हुआ समापन

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, वाराणसी द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन हुआ। समापन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो0 पी0 एन0 झा ने कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय परम्परा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है । कर्म और विद्या के बीच पारस्परिक संबंध को रेखांकित करते हुए प्रो0 झा ने कहा कि कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए । उन्होंने बताया कि शिक्षा के इसी संकल्प को भारतीय ज्ञान परम्परा में अंगीकृत किया गया है । 21वीं सदी में भारत की 'विश्वगुरु' की भूमिका में आने की कामना करते हुए प्रो0 झा ने कहा कि पहले भी जब सारा विश्व अज्ञान रूपी अन्धकार में भटकता था तो भारतीय मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार कर मानव को पशुता से मुक्त कर, श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर सम्पूर्ण मानव बनाते थे । भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्वप्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे । उन्होंने कहा कि आज जरूरत वापस से विस्मृत हुई सनातन ज्ञान परम्परा को सक्रीय स्मृति का अंग बनाने की है जिससे बाहर पुनः विश्वगुरु की भूमिका में विश्व का मार्गदर्शन करे ।

बतौर मुख्य अतिथि बी0 एच0 यू0 के संस्कृत विभाग के प्रो0 सदाशिव कुमार द्विवेदी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे बड़ा आधार थे वेद और इसलिए अंग्रेजों सहित समस्त यूरोपीय बौद्धिक जगत ने वेदों को निरर्थक साबित करने के लिए एड़ी-चोटी एक कर दिया था। उन्होंने बताया कि स्वाभाविक ही था कि वेदों को परम प्रमाण मानने और उन पर गहरी आस्था रखने वाले वैदिक सनातन समाज पर यह एक गंभीर सभ्यतागत आक्रमण था। इस आक्रमण का वैदिक समाज ने जोरदार सामना किया और इन सभी आरोपों के खंडन और वेदज्ञान की श्रेष्ठता को स्थापित करने के लिए विपुल साहित्य की रचना की। उन्होंने भारत शब्द की रचना में ज्ञान परम्परा की समृद्धि का उद्धरण देते हुए समझाया कि भारत शब्द दो धातुओं भा और रत से मिलकर बना है , 'भा' का अर्थ है प्रकाश और 'रत' का अर्थ है संलग्न अर्थात जो सदैव ज्ञान के प्रकाश से आलोकित रहे वह है 'भारत' ।

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में दक्षिण अफ्रीका के डरबन तकनीकी विश्वविद्यालय से आये प्रो0 रविंदर रेना ने कहा कि यशस्वी जीवन और जीवन की सार्थकता के लिए प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को जीवन में ग्राह्य करना आवश्यक है, तभी जीवन की सार्थकता है। भारतीय ज्ञान जीवन के हर विषय में समग्रता के साथ है। समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए आज प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को जानने व समझने की जरूरत है। खासकर वर्तमान पीढ़ी और भावी पीढ़ी को बताए जाने की भी आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि गीता के 15 वे अध्याय के 13वे श्लोक में भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि मैं चंद्रमा की रौशनी हूँ, जो वनस्पति में रस के लिए कार्य करता हैं। इस पर अमेरिका में रिसर्च किया गया और पुष्टि होने के बाद किसानों के लिए कैलेंडर तैयार किया गया है। उदघाटन सत्र का संचालन डॉ0 भावना सिंह ने व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो0 अविनाश चंद्र सुपकर ने दिया।

राष्ट्रीय सहारा

भारतीय ज्ञान परम्परा के मार्ग से ही भारत पुनः बनेगा विश्वगुरु : प्रो. झा

एसएमएस में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का हुआ समापन

देश-विदेश से आये लगभग 500 प्रतिभागियों ने प्रस्तुत किये शोध-पत्र

वाराणसी(एसएनबी)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन रविवार को हुआ। समापन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो पीएन झा ने कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय परम्परा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। उन्होंने बताया कि शिक्षा के इसी संकल्प को भारतीय ज्ञान परम्परा में अंगीकृत किया गया है। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्वप्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे।

मुख्य अतिथि बीएचयू के संस्कृत विभाग के प्रो सदाशिव कुमार द्विवेदी ने भारत शब्द की रचना में ज्ञान परम्परा की समृद्धि का उद्धरण देते हुए समझाया कि भारत शब्द दो धातुओं भा और रत से मिलकर बना है , 'भा' का अर्थ है प्रकाश और 'रत' का अर्थ है संलग्न अर्थात जो सदैव ज्ञान के प्रकाश से आलोकित रहे वह है 'भारत'। दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में दक्षिण अफ्रीका के डरबन तकनीकी विश्वविद्यालय से आये प्रो रविंदर रेना ने बताया कि गीता के 15वें अध्याय के 13वें श्लोक में भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि मै चंद्रमा की रौशनी हूं, जो वनस्पति में रस के लिए कार्य करता है। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ भावना सिंह व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो अविनाश चंद्र सुपकर ने दिया। इस अवसर एसएमएस, के अधिशासी सचिव डॉ एमपी सिंह, निदेशक प्रो पीएन झा, कुलसचिव संजय गुप्ता, कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो अविनाश चंद्र सुपकर, प्रो संदीप सिंह, प्रो राजकुमार सिंह सहित समस्त अध्यापक और कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

सब पर नजर

सबकी खबर

दैनिक मान्यवर

वर्ष- 37 अंक - 167
जौनपुर-सोमवार
फा.शु. 14 संवत 2079
6 मार्च 2023
मूल्य 3 रुपया, पृष्ठ 8

डाक पंजीयन संख्या पी.एम.जी./ ए.डी.- 236 आर.एन.आई. संख्या 46093/ 86

www.dainikmanyawar.in वितरण क्षेत्रः वाराणसी, बलिया, चन्दौली, मिर्जापुर, मऊ, भदोही, आजमगढ़, गाजीपुर, सोनभद्र, जौनपुर, अम्बेडकरनगर, लखनऊ, अयोध्या, सुल्तानपुर, प्रयागराज, गोरखपुर

अदालत ने अनुब्रत की याचिका खारिज की

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के वरिष्ठ नेता अनुब्रत मंडल द्वारा दायर उस याचिका को कलकत्ता उच्च न्यायालय ने शनिवार को खारिज कर दिया जिसमें उन्होंने एक विशेष सीबीआई अदालत द्वारा जारी एक पेशी वारंट को चुनौती दी थी। इससे पशु तस्करी मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा पूछताछ के लिए उन्हें दिल्ली ले जाने का मार्ग प्रशस्त हो गया। अदालत ने साथ ही मंडल को फोरेंस शॉपिंग के लिए एक लाख रुपये जुर्माने का भुगतान करने का भी आदेश दिया। हालांकि बंगाल के आसनसोल में विशेष सीबीआई अदालत द्वारा जारी पेशी वारंट को चुनौती देने वाली मंडल की याचिका को खारिज करते हुए न्यायमूर्ति बिबेक चौधरी ने निर्देश दिया कि टीएमसी के बीरभूम जिला अध्यक्ष को हवाई मार्ग से दिल्ली ले जाया जाए।

भारतीय ज्ञान परम्परा के मार्ग से ही भारत पुनः बनेगा विश्वगुरुः प्रो.झा

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, वाराणसी द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन हुआ। समापन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो० पी० एन० झा ने कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय परम्परा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है । कर्म और विद्या के बीच पारस्परिक संबंध को रेखांकित करते हुए प्रो० झा ने कहा कि कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए । उन्होंने बताया कि शिक्षा के इसी संकल्प को भारतीय ज्ञान परम्परा में अंगीकृत किया गया है । 21वीं सदी में भारत की ह्वविश्वगुरुह्व की भूमिका में आने की कामना करते हुए प्रो० झा ने कहा कि पहले भी जब सारा विश्व अज्ञान रूपी अन्धकार में भटकता था तो भारतीय मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार कर मानव को पशुता से मुक्त कर, श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर सम्पूर्ण मानव बनाते थे । भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, उज्जयिनी, काशी

आदि विश्वप्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे ।

उन्होंने कहा कि आज जरूरत वापस से विस्मृत हुई सनातन ज्ञान परम्परा को सक्रीय स्मृति का अंग बनाने की है जिससे बाहर पुनः विश्वगुरु की भूमिका में विश्व का मार्गदर्शन करे । बतौर मुख्य अतिथि बी० एच० यू० के संस्कृत विभाग के प्रो० सदाशिव कुमार द्विवेदी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे बडा आधार थे वेद और इसलिए अंग्रेजों सहित समस्त यूरोपीय बौद्धिक जगत ने वेदों को निरर्थक साबित करने के लिए एड़ी-चोटी एक कर दिया था। उन्होंने बताया कि स्वाभाविक ही था कि वेदों को परम प्रमाण मानने और उन पर गहरी आस्था रखने वाले वैदिक सनातन समाज पर यह एक गंभीर सभ्यतागत आक्रमण था। इस आक्रमण का वैदिक समाज ने जोरदार सामना किया और इन सभी आरोपों के खंडन और वेदज्ञान की श्रेष्ठता को स्थापित करने के लिए विपुल साहित्य की रचना की।

अमर उजाला

वाराणसी | सोमवार, 6 मार्च 2023

भारतीय ज्ञान परंपरा के मार्ग से ही भारत बनेगा विश्वगुरु

माई सिटी रिपोर्टर

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज की ओर से दो दिवसीय कांफ्रेंस का आयोजन

एसएमएस में प्रो. सदाशिव कुमार दिवेदी (दाएं) को स्मृति चिन्ह भेंट करते प्रो. पीएन झा। संवाद

वाराणसी। बीएचयू के संस्कृत विभाग के प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे बड़ा आधार वेद थे। इन्ही से भारत फिर से विश्वगुरु बनेगा। इसलिए अंग्रेजों सहित यूरोपिक बौद्धिक जगत ने वेदों को निरर्थक साबित करने के लिए एड़ी-चोटी एक कर दिया था। इस आक्रमण का वैदिक समाज ने जोरदार सामना किया।

वह रविवार को स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज की ओर से आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस को संबोधित कर रहे थे। प्रो. द्विवेदी ने कहा कि भारत शब्द दो धातुओं से मिलकर बना है, भा का अर्थ है प्रकाश और रत का अर्थ है अर्थात जो सदैव ज्ञान के प्रकाश से आलोकित रहे वह है भारत। डरबन तकनीकी विश्वविद्यालय के प्रो. रविंदर रेना ने कहा कि गीता के 15वें अध्याय के 13वें श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं चंद्रमा की रोशनी हूं, जो वनस्पति में रस के लिए कार्य करता है।

एसएमएस के निदेशक प्रो. पीएन झा ने कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय परंपरा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म ओर धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। कार्यक्रम में देश-विदेश के पांच सौ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान डॉ. भावना सिंह, प्रो. अविनाश चंद्र सुपकर, डॉ. एमपी सिंह, प्रो. पीएन झा आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान
वाराणसी, मंगलवार, 7 मार्च 2023

ज्ञान परंपरा से देश बनेगा विश्वगुरु : प्रो. पीएन झा

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइसेज में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के अंतिम दिन निदेशक प्रो.पीएन झा ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपराओं का अनुसरण करके ही भारत को विश्वगुरु बनाया जा सकता है। कॉन्फ्रेंस में देश विदेश के आए 500 प्रतिभागियों ने शोधपत्र प्रस्तुत किये।

मुख्य अतिथि बीएचयू के संस्कृत विभाग के प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी थे। कॉन्फ्रेंस में दक्षिण अफ्रीका के डरबन तकनीकी विवि के प्रो. रविंदर रेना भी उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. भावना सिंह व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस समन्वयक प्रो.

अविनाश चंद्र सुपकर ने किया। दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन आठ अलग-अलग तकनीकी सत्रों का आयोजन हुआ। इस अवसर एसएमएस के अधिशासी सचिव डॉ. एमपी सिंह, कुलसचिव संजय गुप्ता, प्रो. संदीप सिंह, प्रो. राजकुमार सिंह सहित समस्त शिक्षक व कर्मचारी रहे।

राष्ट्रीय सहारा

वाराणसी। सोमवार • 6 मार्च • 2023

भारतीय ज्ञान परम्परा के मार्ग से ही भारत पुनः बनेगा विश्वगुरु : प्रो. झा

एसएमएस में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का हुआ समापन

देश-विदेश से आये लगभग 500 प्रतिभागियों ने प्रस्तुत किये शोध-पत्र

वाराणसी(एसएनबी)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन रविवार को हुआ। समापन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो पीएन झा ने कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय परम्परा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। उन्होंने बताया कि शिक्षा के इसी संकल्प को भारतीय ज्ञान परम्परा में अंगीकृत किया गया है। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्वप्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे।

मुख्य अतिथि बीएचयू के संस्कृत विभाग के प्रो सदाशिव कुमार द्विवेदी ने भारत शब्द की रचना में ज्ञान परम्परा की समृद्धि का उद्धरण देते हुए समझाया कि भारत शब्द दो धातुओं भा और रत से मिलकर बना है , 'भा' का अर्थ है प्रकाश और 'रत' का अर्थ है संलग्न अर्थात जो सदैव ज्ञान के प्रकाश से आलोकित रहे वह है 'भारत'। दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में दक्षिण अफ्रीका के डरबन तकनीकी विश्वविद्यालय से आये प्रो रविंदर रैना ने बताया कि गीता के 15वें अध्याय के 13वें श्लोक में भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि मै चंद्रमा की रौशनी हूं, जो वनस्पति में रस के लिए कार्य करता है। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ भावना सिंह व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो अविनाश चंद्र सुपकर ने दिया। इस अवसर एसएमएस, के अधिशासी सचिव डॉ एमपी सिंह, निदेशक प्रो पीएन झा, कुलसचिव संजय गुप्ता, कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो अविनाश चंद्र सुपकर, प्रो संदीप सिंह, प्रो राजकुमार सिंह सहित समस्त अध्यापक और कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

pradabad@gmail.com moradabadujala www.moradabadujala .com

हिन्दी दैनिक

मुरादाबाद उजाला

मुरादाबाद
वर्ष 02
अंक 105
मंगलवार
07 मार्च , 2023
पृष्ठ - 8
मूल्य- 2.00
TC. UPHIN/42838

भारतीय ज्ञान परम्परा के मार्ग से ही भारत पुनः बनेगा विश्वगुरुः प्रो0 पी0 एन0 झा

मुरादाबाद उजाला/रोहित सेठ

वाराणसी। 5 मार्चः स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, वाराणसी द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन हुआ। समापन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो० पी० एन० झा ने कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय परम्परा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है । कर्म और विद्या के बीच पारस्परिक संबंध को रेखांकित करते हुए प्रो० झा ने कहा कि कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए । उन्होंने बताया कि शिक्षा के इसी संकल्प को भारतीय ज्ञान परम्परा में अंगीकृत किया गया है । 21वीं सदी में भारत की विश्वगुरु की भूमिका में आने की कामना करते हुए प्रो० झा ने कहा कि पहले भी जब सारा विश्व अज्ञान रूपी अन्धकार में भटकता था तो भारतीय मनीषी उच्चतम

1- एस०एम०एस०, वाराणसी में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का हुआ समापन
2- सतत विकास के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा पर विद्वानों ने व्यक्त किये विचार
3- कॉन्फ्रेंस में देश-विदेश से आये लगभग 500 प्रतिभागियों ने प्रस्तुत किये शोध-पत्र

ज्ञान का प्रसार कर मानव को पशुता से मुक्त कर, श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर सम्पूर्ण मानव बनाते थे । भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्वप्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे । उन्होंने कहा कि आज जरूरत वापस से विस्मृत हुई सनातन ज्ञान परम्परा को सक्रीय स्मृति का अंग बनाने की है जिससे बाहर पुनः विश्वगुरु की भूमिका में विश्व का मार्गदर्शन करे । बतौर मुख्य अतिथि बी० एच० यू० के संस्कृत विभाग के प्रो० सदाशिव कुमार द्विवेदी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे बड़ा आधार थे वेद और इसलिए अंग्रेजों सहित समस्त यूरोपीय बौद्धिक जगत ने वेदों को निरर्थक साबित करने के लिए एड़ी-चोटी एक कर दिया था। उन्होंने बताया कि स्वाभाविक ही था कि वेदों को परम प्रमाण मानने और उन पर गहरी आस्था रखने वाले वैदिक सनातन समाज पर वह एक गंभीर सभ्यतागत आक्रमण था। इस आक्रमण का वैदिक समाज ने जोरदार सामना किया और इन सभी आरोपों के खंडन और वेदज्ञान की श्रेष्ठता को स्थापित करने के लिए विपुल साहित्य की रचना की। उन्होंने भारत शब्द की रचना में ज्ञान परम्परा की समृद्धि का उद्धरण देते हुए समझाया कि भारत शब्द दो धातुओं भा और रत से मिलकर बना है ,का अर्थ है प्रकाश और भारत का अर्थ है संलग्न अर्थात जो सदैव ज्ञान के प्रकाश से आलोकित रहे वह है भारत। दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में दक्षिण अफ्रीका के डरबन तकनीकी विश्वविद्यालय से आये प्रो० रविंदर रेना ने कहा कि यशस्वी जीवन और जीवन की सार्थकता के लिए प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को जीवन में ग्राह्य करना आवश्यक है, तभी जीवन की सार्थकता है। भारतीय ज्ञान जीवन के हर विषय में समग्रता के साथ है। समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए आज प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को जानने व समझने की जरूरत है। खासकर वर्तमान पीढ़ी और भावी पीढ़ी को बताए जाने की भी आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि गीता के 15 वे अध्याय के 13वे श्लोक में भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि मैं चंद्रमा की रौशनी हूँ, जो वनस्पति में रस के लिए कार्य करता हैं। इस पर अमेरिका में रिसर्च किया गया और पुष्टि होने के बाद किसानों के लिए कैलेंडर तैयार किया गया है। उदघाटन सत्र का संचालन डॉ० भावना सिंह ने व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो० अविनाश चंद्र सुपकर ने दिया । दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन आठ अलग अलग तकनीकी सत्रों का आयोजन भी हुआ जिसमें देश-विदेश से आये लगभग 500 प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया । इस अवसर एस०एम० एस०, वाराणसी के अधिशासी सचिव डॉ० एम० पी० सिंह, निदेशक प्रो० पी० एन० झा, कुलसचिव श्री संजय गुप्ता, कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो० अविनाश चंद्र सुपकर, प्रो० संदीप सिंह, प्रो० राजकुमार सिंह सहित समस्त अध्यापक और कर्मचारी गण उपस्थित रहे ।